eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI
VISHWAVIDYALAYA
PUBLICATION

PERSPECTIVE ARTICLE

यज्ञ के तीन चरण प्रयाज, याज एवं अनुयाज की समाज निर्माण में महत्ता

मनीषा भारद्वाज [1]

[1] असिस्टेंट टीचर, श्री बालभारती प्रसाद शुक्ला पब्लिक स्कूल, चिनहट, लखनऊ, भारत

सारांश: यज्ञ संस्कार आदि कर्मकाण्ड भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा लम्बी शोध एवं प्रयोग परीक्षण द्वारा विकसित असामान्य क्रिया–कृत्य हैं। इसमें अनुशासनबद्ध स्थूल क्रिया–कलापों के द्वारा अन्तरंग की सूक्ष्म शक्तियों को जागृत एवं व्यवस्थित किया जाता है। इसमें अनुशासनबद्ध स्थूल क्रिया–कलापों के द्वारा अन्तरंग की सूक्ष्म शक्तियों को जागृत एवं व्यवस्थित किया जाता है। यज्ञ के तीन महत्त्वपूर्ण चरण – प्रयाज, याज एवं अनुयाज, जिनके द्वारा यज्ञीय प्रेरणाओं में वृद्धि द्वारा मानव और समाज का कल्याण संभव है। यज्ञीय भावनाओं के विकास के लिए यज्ञ के तीन चरण – प्रयाज, याज, और अनुयाज, गहराई से महत्त्वपूर्ण हैं। प्रयाज, यज्ञ के प्रथम चरण में समाज की सामाजिक सद्गुणों की आध्यात्मिक ऊर्जा को जागृत करता है। यह चरण व्यक्ति को अपनी आध्यात्मिक साधना के लिए उपयुक्त उपकरण प्रदान करता है और उसे अपने मन को शुद्ध करने और आध्यात्मिक दिशा में अग्रसर होने का मार्ग दिखाता है। याज, यज्ञ के द्वितीय चरण में समाज के लोगों को एक साथ आने का अवसर मिलता है और यज्ञ में सम्मिलित व्यक्तियों में सहयोग, नैतिकता, और सामाजिक समरसता की भावना की अभिवृद्धि होती है। इस चरण से सामाजिक जीवन को सुखद और समृद्ध बनाने में सहायता मिलती है और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा दिया जाता है। अनुयाज, यज्ञ के तृतीय चरण में समाज में सामाजिक न्याय और धर्म की प्रतिष्ठा को बनाए रखने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस चरण से प्रजा के अंतर्निहित गुणों में प्रेम, सद्भाव, उदारता, सहयोग, ईमानदारी, संयम, और सदाचार का विकास होता है, जिससे समाज में समरसता और न्याय का परिचय बढ़ता है। इस तरीके से, यज्ञ के तीन चरण सामाजिक सद्गुणों की संकल्पना को बढ़ावा देते हैं और आध्यात्मिक सामर्थ्य को प्रोत्साहित करते हैं।

कूट शब्द: यज्ञ, प्रयाज, याज, अनुयाज, सामाजिक सद्गुण, आध्यात्मिक ऊर्जा, मानव कल्याण, समाज निर्माण

*CORRESPONDENCE
Address असिस्टेंट टीचर, श्री बालभारती प्रसाद शुक्ला पब्लिक स्कूल, चिनहट, लखनऊ
फ़ोन नम्बर +91 9873881848
Email
manisha.mokshda@gmail.com

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2023 Manisha Bhardwaj
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

प्रस्तावना

यज्ञ संस्कार आदि कर्मकाण्ड भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा लम्बी शोध एवं प्रयोग परीक्षण द्वारा विकसित असामान्य क्रिया–कृत्य हैं। इनके माध्यम से महत् चेतना तथा मानवीय पुरुषार्थ की सूक्ष्म योग साधना को दृश्य–श्रव्य स्वरुप दिया गया है। इस–में अनुशासनबद्ध स्थूल क्रिया–कलापों के द्वारा अन्तरंग की सूक्ष्म शक्तियों को जागृत एवं व्यवस्थित किया जाता है। मा–नवीय अंत:करण में सत्प्रवृत्तियों, सद्भावनाओं, सुसंस्कारों के जागरण, आरोपण, विकास व्यवस्था आदि से लेकर महत् चे–तना के वर्चस्व बोध कराने, उनसे जुड़ने, उनके अनुदान ग्रहण करने तक के महत्वपूर्ण क्रम में यज्ञीय कर्मकाण्ड की सुनिश्चित उपयोगिता है। यज्ञ 'यज' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है– देवत्व, संगठन एवं दान। इन तीनों ही प्रवृत्तियों को व्यक्ति और समाज के उत्कर्ष की दिव्य धारायें कहा जा सकता है। इन तीन प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व यज्ञ करता है। यज्ञ को भारतीय संस्कृति का पिता कहा गया है। पिता अर्थात् पालनकर्ता एवं समाज को संरक्षण देने वाला। यही वह प्रमुख आधार है, जि–ससे समाज प्रगति करता एवं समुन्नत बनता है। वेदांत परंपरा में यज्ञ के तीन महत्त्वपूर्ण चरण बताए गए हैं– प्रयाज, याज एवं अनुयाज, जिनके द्वारा यज्ञीय प्रेरणाओं में वृद्धि द्वारा मानव और समाज का कल्याण संभव है। [1, 2]

प्रयाज: सामाजिक सद्गुणों का आध्यात्मिक आधार

प्रयाज यज्ञ का पहला चरण होता है, जिसमें यज्ञ की घोषणा होने से लेकर यज्ञ प्रारंभ होने तक की सारी प्रक्रियाएँ आती हैं। यज्ञ स्थल का चुनाव, सामग्री जुटाना, यज्ञ संस्कार के लिए आवश्यक आध्यात्मिक ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए जप–तप के विधान आदि सभी कार्यों का समावेश इसमें होता है। इसके साथ ही यह व्यक्ति को अपनी आध्यात्मिक साधना के लिए उपयुक्त उपकरण प्रदान करता है। यह चरण व्यक्ति के मन को शुद्ध करने और आध्यात्मिक दिशा में अग्रसर होने का मार्ग तैयार करता है। मनोविज्ञान के विशेषज्ञ जानते हैं कि मनुष्य स्वभावतः स्थूल प्रतीकों के माध्यम से कोई भी बात शीघ्रता से सीखता है। इसी कारण यज्ञ में उपयोग होने वाली सामग्री का चयन धर्म, सामाजिक न्याय, और नैतिकता के सिद्धांतों के आधार पर ही किया जाता है। किस प्रयोग के लिए किस प्रकार की वस्तुएँ होमी जाती हैं, इसका भी विज्ञान है। इन सभी वस्तुओं के आपस में मिलने से एक विशेष गुण संयुक्त सम्मिश्रण तैयार होता है, जो जलने पर वायुमंडल में एक विशिष्ट प्रभाव पैदा करता है, जिसके फलस्वरूप यज्ञ में सम्मिलित होने वाले तथा निकटवर्ती व्यक्तियों में सामाजिक जिम्मेदारी और सद्गुणों की समझ पैदा होती है। यज्ञ की प्रतीक–प्रतिमा में सन्निहित सूक्ष्म प्रेरणाएँ व्यक्ति को पवित्र और समाज को समर्थ बनाने का लोक–शिक्षण जितनी अच्छी तरह देती हैं, वैसा अन्य किसी धर्मकृत्य द्वारा संभव नहीं। [3, 4]

याज: सामाजिक सहयोग और नैतिकता

यज्ञ का दूसरा चरण याज, यज्ञ के आयोजन से सम्बंधित है, जिसमें समाज के लोगों को एक साथ आने का अवसर मिलता है। यह चरण यज्ञ की अग्निहोत्री और ब्राह्मण द्वारा किए जाने वाले रिचुआल्स को शामिल करता है। यज्ञ के इस चरण में अग्नि में आहुतियाँ दी जाती हैं, जिसके द्वारा अनेक सत्परिणाम उत्पन्न होते हैं। संसार में किसी भी वस्तु का नाश नहीं होता, केवल रूपन्तरण होता है। जो वस्तु यज्ञाग्नि में होमी जाती हैं, तथा वेद मन्त्रों की शक्ति के साथ जो सदभावनाएँ उत्पन्न की जाती हैं, वे दोनों मिलकर आकाश में छा जाती हैं। इस चरण के फलस्वरूप यज्ञ में सम्मिलित व्यक्तियों में भक्ति और सम–र्पण भावना की अभिवृद्धि होती है, जिससे उनका आध्यात्मिक अवबोध और सामर्थ्य विकसित होते हैं। जब यज्ञकर्ता अपने काम आ सकने वाले घृत, मेवा, मिष्ठान्न आदि उपयोगी पदार्थों को पेट काटकर परमार्थ के लिए आहुतियों के रूप में समर्पित करता है तो उसके जीवन में त्याग, संयम, सेवा, सदाचार, परोपकार, उदारता, सहृदयता, आत्म–निर्माण आदि भावनाएँ स्वयमेव विकसित होने लगती हैं। यज्ञ का यह चरण सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देता है और हर दृष्टि से सामाजिक जीवन को सुखद और समुन्नत बनाता है। इन प्रवृत्तियों की निर्बलता से ही हमारा सामाजिक तंत्र लड़खड़ा गया है। [3, 5]

अनुयाज: सामाजिक न्याय और धर्म

अनुयाज यज्ञ का तीसरा चरण होता है, जिसमें यज्ञ के बाद की प्रतिष्ठापना और पुण्य कर्मों का ध्यान रखा जाता है। यह चरण समाज में सामाजिक न्याय और धर्म की प्रतिष्ठा को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यज्ञ के प्रभाव से प्रजा के अंत:करण में प्रेम, एकता, सहयोग, सद्भाव, उदारता, ईमान–दारी, संयम, सदाचार, आस्तिकता आदि सद्भावों एवं सद्विचारों का स्वयमेव अविर्भाव होने लगता है। यज्ञ प्रक्रिया में अपने को परमात्मा के चरणों में समर्पित करने के उपरांत अपना स्वरुप भी अग्नि में पड़ी हुई समिधा तथा सामग्री की भांति हो जाता है। परमात्मा की आज्ञाएँ, प्रेरणाएँ यज्ञकर्ता के अंत:कारण में स्थापित होने लगती हैं। सर्व व्यापक परमात्मा को सबमें समाया हुआ देखकर कोई दुष्कर्म करने का साहस नहीं करता और इस प्रकार समाज में समरसता और न्याय के प्रति विश्वास को भी बढ़ावा मिलता है। समाज में कुविचार और कुकर्मों के अभाव में समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होने लगता है। [3, 6]

उपसंहार

वेद में बहुत जगह 'यज्ञम् विततम', 'यज्ञम् वर्चयान:', 'यज्ञम् वर्धन्' – इस प्रकार के वाक्य या शब्द आते हैं, जिनमें यज्ञ के

विस्तार करने– बढ़ाने का वर्णन होता है। सृष्टि के आरंभ में पर–मात्मा ने एक महान यज्ञ किया जिसमें उसने अपनी नहीं हमारी सुख सुविधाओं के लिए अनेकों प्रकार की सुख–सुविधाएँ रचीं। परमात्मा की इच्छा थी कि हम इस यज्ञ प्रक्रिया को जारी रखें और परमात्मा की दी हुई सभी वस्तुएँ उसके इस विराट रूप विश्व को, मानव को, समाज को सोंप दें। परस्पर आदान–प्रदान की इसी प्रक्रिया का नाम यज्ञ है। आज सर्वत्र यह यज्ञीय क्रम टूटता दिखाई पड़ता है। हम परमात्मा की दी हुई वस्तुओं को खुशी–खुशी ले लेते हैं, जो प्राप्त नहीं है, उसके लिए झगड़ते हैं, प्रार्थना करते हैं और यदि मनोवांछित अभिलाषा से कम मिलता है तो परमात्मा पर क्रोध भी करते हैं। यह व्यापक रूप से छाई हुई स्वार्थपरता परमात्मा के यज्ञ उद्देश्य के प्रति–कूल है। इस स्वार्थ परता का त्याग, संयम, सेवा, सदाचार, परोपकार, उदारता, सहृदयता आदि सद्भावनाओं को चरि–तार्थ करना ही वास्तविक यज्ञ है, जिसका स्थूल रूप हवन है। यज्ञीय भावनाओं के विकास के लिए यज्ञ के तीन चरण – प्रयाज, याज, और अनुयाज, गहराई से महत्त्वपूर्ण हैं। ये चरण समाज के सद्गुणों का विकास करने, सामाजिक सम–रसता को बढ़ाने, और आध्यात्मिक सामर्थ्य को प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन तीनों के माध्यम से, समाज में आध्यात्मिक और नैतिक मौन्यता का विकास होता है, जो समृद्धि और सद्गुणों के प्रति लोगों की जागरूकता को बढ़ावा देता है।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

References

[1] Sharma S. भूमिका (*Bhumika*) [Introduction]. In: Karmakand Bhaskar. Revised Edition, Publisher: Yug Nirman Yojana Vistar trust. 2010

[2] Brahmvarchas, editor. गायत्री यज्ञ – उपयोगिता और आव–श्यकता [*gaayatree yagy - upayogita aur aavashyakata*: Gayatri Yagya – utility and necessity]. In: Yagya ka Gyan Vigyan. [Pandit Shriram Sharma Acharya Vangmay 25] Mathura: Akhand Jyoti Sansthan, Mathura. 1995

[3] Sharma B (Editor). प्रयाज, याज, अनुयाज (*Prayaj, Yaj, Anuyaj*). Akhand Jyoti Magazine, 1992(11):28. Available from : All World Gayatri Pariwar).

[4] Brahmvarchas, editor. यज्ञ के विविध लाभ [*yagy ke vividh laabh*: Various benefits of Yagya]. In: Yagya ka Gyan Vigyan. [Pandit Shriram Sharma Acharya Vangmay 25] Mathura: Akhand Jyoti Sansthan, Mathura. 1995

[5] Brahmvarchas, editor. यज्ञ की अनिवार्य महत्ता [*Yagya ki anivarya Mahatta*: Essential Importance of Yagya]. In: Yagya ka Gyan Vigyan. [Pandit Shriram Sharma Acharya Vangmay 25] Mathura: Akhand Jyoti Sansthan, Mathura. 1995

[6] Brahmvarchas, editor. विश्व कल्पतरु यज्ञ [*Vishwa Kalpataru Yagya*]. Yagya ka Gyan Vigyan. In: [Pandit Shriram Sharma Acharya Vangmay 25] Mathura: Akhand Jyoti Sansthan, Mathura. 1995